पेरिस–जोहान्सवर्ग वायुयात्रा
अप्रैल २४, २००८

संदेश संख्या – १४१

कालातीत क्रिया का आनन्द

कुछ दिनों पूर्व स्पेन में राजमार्ग पर एक लम्बी कार–यात्रा के दौरान आतिथेय (मेजबान) ने पूछाः ''विभिन्न समूहों द्वारा क्रिया–अभ्यास के लिए भिन्न–भिन्न तकनीकों को स्वीकार किया गया है तथा प्रत्येक अपने को सही और अधिकृत मानता है । वे पुस्तकें छपवाते हैं तथा इंटरनेट पर अपने दावे के समर्थन में पत्र एवं 'प्रमाण' प्रस्तुत करते हैं किन्तु वे सभी अपनी जड़ आपके प्रपितामह लाहिड़ी महाशय या आपके पिता श्री सत्यचरण लाहिड़ी में ही खोजते हैं । वे तकनीकों में खोये रहते हैं तथा एक–दूसरे का दोष निकालते हैं। वे अपने तथाकथित ''आध्यात्मिक'' गतिविधियों में बिल्कुल षड्यन्त्रकारी एवं गोपनशील होते हैं । यह सब क्या है ?''

शिवेन्दु : यह सब क्षुद्र मन की मूर्खतायें हैं जो विद्रूप विभेदकारी चित्त (मैं) में फँसा हुआ है और नियतकाल में कुछ बनने हेतु निरन्तर प्रयासरत है । परन्तु चेतना के आन्तरिक आयाम में समय ही शत्रु है जो विचारक और विचार के विलय को रोकता है । मन की सत्ता, कितना भी सूक्ष्म क्यों न हो, कुछ बनने के प्रयास द्वारा समय चुराकर सुरक्षित बना रहता है । अनुभव अतीत पर आधारित अनुबंधित प्रतिबिम्ब होते हैं और ये अनुभव मनुष्य को जीवन में प्रत्यक्षबोध और अन्तर्दृष्टि की कालातीत क्रिया जो क्रियायोग का सार है, से दूर कर देते हैं । क्रिया–अभ्यास के नाम पर, मिथ्या ''मैं'' की गतिविधियों में ही सीमित रहना और कुछ नहीं बल्कि पवित्र क्रिया–प्रविधि का अपवित्रीकरण है। क्रिया–योग से ''मैं'' की मृत्यु हो जाती है और वही नवजीवन का अमरत्व है।

तकनीकी दुनिया में, आप मशीनों एवं उनकी कार्यकुशलता की तुलना कर सकते हैं । परन्तु क्रियायोग कोई मशीन नहीं है जिसमें मूर्खतापूर्ण मन वाले लोगों को कच्चे माल के रूप में एक तरफ डाला जाय और दूसरी ओर नियत काल में प्रबुद्ध लोग वाहक पट्टे (कनवेयर बेल्ट) से बाहर निकल आयें । प्राणायाम एवं अन्य क्रिया–अभ्यासों को तुम अगले १० हजार वर्षों तक कर सकते हो, फिर भी तुम सत्य को प्राप्त करने के निकट भी नहीं पहुँचोगे क्योंकि तुमने स्वयं को बिल्कुल नहीं समझा है कि तुम कैसे सोचते हो, कैसे जीते हो । तुम अपने दुःख एवं अवसाद में फँसे हो और फिर भी, 'प्रबोध' पाना चाहते हो । कुछ लोगों को लगता है कि क्रियायोग उन्हें कुछ शक्ति, कुछ सम्मान और कुछ धन–सम्पत्ति भी दे सकता है और इसीलिए वे इसकी तरफ आकर्षित होते हैं । समझदारी (स्वाध्याय) रूपी देदीप्यमान सूर्य के प्रकाश के समक्ष इस तरह की सभी शक्तियाँ मोमबत्ती के प्रकाश की तरह हैं । स्वाध्याय ऊर्जा का घनीभूत रूप है । किसी के अनुरूप होना और बनना ऊर्जा का क्षरण है । स्वाध्याय की शान्ति में सम्मान की चाहत नहीं होती । इस शान्ति में विभाजन का भेद बिल्कुल समाप्त हो जाता है । विचार यांत्रिक है जबकि क्रिया नहीं । सजगता की अग्नि के साथ निर्मन को आध्यात्मिक मंडी की माँग एवं पूर्त्ति के नियम के तहत नहीं खरीदा जा सकता। यह तभी अस्तित्व में आता है जब विचार अपने स्वयं की गतिविधियों के प्रति सजग होता है, न कि तब जब 'विचारक' 'अपने' विचारों के प्रति सजग होता है ।

।। जय शून्यता ।।